Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

मेलापक (अष्टकूट विचार)

डॉ. निर्भय कुमार पाण्डेय
सहायक प्राचार्य (ज्योतिष), रामाधीन मिश्र भास्करोदय संस्कृत महाविद्यालय,
देवढिया, बक्सर (अंगीभूत इकाई), का.सिं.द.सं. विश्वविद्यलाय, दरभंगा, बिहार।

Article Info
Accepted : 01 March 2025
Published : 15 March 2025
Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2
Page Number : 24-31

शोधसारांश– मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ भाव में, मकर राशि का सातवें, कर्क राशि का आठवें एवं धनु राशि का मंगल 12वें भाव में हो तो मंगल दोष नहीं होता।

मुख्य शब्द– मेलापक, श्रुति, संस्कृत, राशि, संस्कार, मानव, कलियुग।

''संस्कृयतेऽनेन श्रौतेन कर्मणा स्मार्तेन वा पुरुष इति संस्कारः।'' अर्थात् श्रुति और स्मृतियों में कथित जिन कर्मों से मानव को संस्कृत किया जाता है उसे ही संस्कार कहते हैं। जिस प्रकार रत्नादि विशेष वैज्ञानिक संस्कारों से संस्कृत होने पर स्वच्छ व दर्शनीय हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी अनेक शुभ संस्कारों से सुसंस्कृत होने पर मानव रत्न की संज्ञा प्राप्त करता है।

मानव के समस्त संस्कारों की संख्या 48 बतलायी गई है। प्राक्काल में मनुष्य इन 48 संस्कारों से संस्कृत होता था। परन्तु कालवश कलियुग में इन सभी संस्कारों को न कर पाने की स्थिति में 16 विशेषतः आचरणीय संस्कारों को अवश्य ही करना चाहिए। यह हैं–

1. गर्भाधान	2. पुंसवन	3. सीमन्तोन्नयन	4. जातकर्म
5. नामकरण	6. निष्क्रमण	7. अन्नप्राशन	8. चूणाकर्ण
9. कर्णवेध	10. व्रतबन्ध	11. वेदारम्भ	12. केशान्त
13. समावर्तन 14. विवाह	15. अग्निपरिग्रह	16. अन्त्येष्टि।	

सनातन धर्म में एक क्षण भी किसी आश्रम के बिना न रहने का निर्देश दिया है। यथा–

अनाश्रमी न तिष्ठेत क्षणमेकमपि द्विजः।
आश्रमादाश्रमं गच्छेदेष धर्मः सनातनः।। (मनुस्मृति)

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

यज्ञादि कर्म भार्या के बिना सफल नहीं होते। स्मृतियों में भी अग्निहोत्रादीनां नित्यानां कर्मणां करणे पत्नीं बिना नाधिकार इति (याज्ञवलक्य स्मृति)। अतः समावर्तन के बाद विवाह कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

याज्ञवल्क्य के यत्रानुकूल्यं दम्पत्यो स्त्रिवर्गस्तत्र वर्धते (याज्ञवलक्य स्मृति) इस वचनानुसार यदि दम्पति में अनुकूलता हो तो दोनों को त्रिवर्ग की प्राप्ति होती है। अतः दाम्पत्य जीवन की अनुकूलता के लिए ही ज्योतिष शास्त्र में मेलापक का विचार किया जाता है। मेलापक कुछ आचार्य दश (10) तथा कुछ अठ्ठारह (18) प्रकार के मेलापक (कूटों) का वर्णन करते हैं। यथा दश प्रकार के कूट नारदोक्त–

दिनं गणं च माहेन्द्रं स्त्रीदीर्घ योनिरेवच।
राशिराश्यधिपौ रज्जुर्वश्यं वेधो दश स्मृताः।। (नारद संहिता)

गर्गोक्त 18 प्रकार के कूट–

माहेन्द्रं गणकूटं च दिनकूटं च योनिजम्।
स्त्रीदीर्घ रज्जुकूटं च वश्यं वर्णाख्यकूटकम्।।
राशिराश्यधिपाख्यै च वेधो नाड्याख्यकूटकम्।
भूलिङ्गाख्यकूटं च जात्याख्यं पक्षिकूटकम्।।
योगिनीगोत्रकूटं च कूटान्याष्टादशैव तु।
दम्पत्योर्वृद्धिकारीणि यत्नाच्चित्यानि शास्त्रतः।। (गर्गसंहिता)

परन्तु दश अथवा अठारह प्रकार से मेलापक की दुरूहता को देखते हुए अन्य आचार्यों ने आठ प्रकार के कूटों का ग्रहण किया है, तथा ये ही सर्वत्र प्रचलित व मान्य हैं। ये हैं–

वर्णो वश्यं तथ तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चौते गुणाधिकाः।। (मु. चि. वि. प्र.)

अर्थात क्रमशः–

1. वर्णकूट २. वश्यकूट 3. ताराकूट 4. योनिकूट
5. ग्रहमैत्री कूट 6. गणमैत्रीकूट 7. भकूट 8. नाड़ी कूट।

विवाहार्थ इनका विचार करना चाहिए। ये क्रमशः एक से आरम्भ कर एकाधिक गुणवाले होते हैं। इस प्रकार इनकी कुल गुण संख्या 36 होती है। आठों मेलापकों का विचार क्रमशः प्रस्तुत है–

1. वर्णकूट– सभी राशियों को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन चार वर्णों में विभक्त कर वर–कन्या के राशि वर्णानुसार इसका विचार किया जाता है। रामदैवज्ञ के मतानुसार–

द्विजा झषलिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिक्षजाः।

वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः।। (मु. चि. वि. प्र.)

यह राशियों के वर्ण से श्रेष्ठ है तथा कन्या का वर्ण वर के वर्ण से श्रेष्ठ नहीं होना चाहिए।

विशेष– यहाँ कुछ विद्वानों का मत है कि वर्ण का विचार राशियों के अनुसार होने से जातिवर्ण से कोई प्रयोजन नहीं हैं। परन्तु यहाँ स्पष्ट है कि ब्राह्मण वर्ण का वर किसी भी वर्ण की कन्या से विवाह कर सकता है, क्षत्रिय वर्ण का ब्राह्मण वर्ण को छोड़ अन्य किसी से, वैश्य वर्ण का ब्राह्मण, क्षत्रिय को त्यागकर तथ शूद्र वर्ण वाला केवल शूद्र वर्ण की कन्या से। यहाँ ध्यातव्य है कि यही व्यवस्था मनु ने जातिवर्ण के सन्दर्भ में दी है। अतः यह राशिवर्णं भी जातिवर्ण से अनुप्राणित है यह मेरा विचार है।

2. वश्यकूट– इस कूट का विचार राशियों के बीच परस्पर स्वामी–दास्य भाव के अनुसार किया गया है। अर्थात् जो राशि जिस राशि के वश में हो जाये वह दास दूसरा स्वामी। यह सामान्य लोक व्यवहार के अनुकूल है। अतः समाज में वर को स्वामी का स्थान प्राप्त होने से वर की राशि के वैश्य कन्य की राशि को होना चाहिए। यथा रामदैवज्ञ–

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्याः।

सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत्।। (मु.चि.वि.प्र)

3. ताराकूट– इस मेलापक में नक्षत्रों का उपयोग किया गया है (सम्भवतः इसी कारण इसका नाम भी ताराकूट है)। कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर से कन्या नक्षत्र तक गिनकर 7 का भाग देते हैं (एक राशि में व चरण होने से) यदि शेष विषम हो तो अशुद्धि, तथा सम हो तो शुद्ध होता है। यदि वर–कन्या दोनों की ताराएं शुभ हों तो तीन गुण तथा एक की शुभ दूसरे की अशुभ हो तो डेढ़ गुण होते हैं। इसका ज्ञान रामदैवज्ञ के अनुसार–

कन्यार्भाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि।

गणयेन्नवह्रच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम्।। (मु. चि. वि. प्र.)

4. योनिकूट– सभी नक्षत्रों को विभिन्न 14 पशु योनियों में विभक्त कर इसका विचार किया जाता है। जिस पशु का जिस पशु से वैरभाव होता है। तद्नुसार ही इसका भी विचार किया जाता है। इसका ज्ञान निम्न श्लोक से भंली–भांति हो जाता है–

अश्विन्मम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः,

सिंहो वस्वजपाभ्दयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः।

मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः,

स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः।।

ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा,

मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरूः।

व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो,

योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत।। (मु. चि. वि. प्र.)

5. ग्रहमैत्रीकूट– दाम्पत्य जीवन में मधुरता के लिए वर–कन्या के बीच ग्रहमैत्री को परमावश्यक माना गया है। ज्योतिष शास्त्र में बहुशः ग्रहों के मित्र, शत्रु, सम को बताया गया है। उसी के अनुसार यहाँ भी विचार करते हैं। इसमें जो विशेषता है तथा किस स्थिति में कितने गुण प्राप्त होते हैं इसका ज्ञान निम्न श्लोक के द्वारा हो जाता हैं–

ग्रहमैत्रं सप्तविधं गुणाः पञ्च प्रकीर्त्तिताः,

तत्रैकाधिपतित्वे च मित्रत्वे गुणपञ्चकम्।

चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोः साम्ये त्रयो गुणाः,

मित्रवैरे गुणश्चैकः समवैरे गुणार्द्धकम्।।

परस्परं खेटवैरे गुणशून्यं विनिद्धिशेत्

असद्धे सममित्रादौ व्येका ग्राह्यभा यथोदिताः।। (दैवज्ञमनोहर)

6. गणकूट– सभी नक्षत्रों को तीन गणों देव, मानव, राक्षस में विभक्त कर परस्पर मित्र, शत्रु, सम के स्वभावानुसार वर–कन्या के बीच सुहृदता का ज्ञान इसके द्वारा समझा जा सकता है–

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरूणानलतक्षराधाः।

पूर्वोत्तरात्रयविधात्यमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरूल्लघूनि।।

(मु.चि.वि.प्र.)

देवगण – अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती तथा लघुसंज्ञक नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्प)।

मनुष्यगण– पूर्वात्रय, उत्तरात्रय, रोहिणी, भद्रा तथा आर्द्रा।

राक्षसगण– मघा, आश्लेषा, घनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा व विशाखा।।

7. भकूट– इस कूट का विचार राशियों के अनुसार किया गया है यथा–

मृत्युः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।

द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत।। (मु. चि. वि. प्र.)

अर्थात वर–कन्या की परस्पर छठीं, आठवीं हो तो मृत्यु, नवीं, पाँचवी हो तो सन्तान हानि, तथा दशवीं, बारहवीं हो तो निर्धनता होती है। तथा दोनों की एक राशि या परस्पर सातवीं या तृतीय–एकादश, चतुर्थ, दशम हो तो सम्पूर्ण अर्थात 7 गुण अन्यथा शून्य होता है।

8. नाड़ीकूट– यह मेलापक सर्वाधिक प्रभाव कारक है। इसीलिए इसे सर्वाधिक 8 प्राप्त हैं। सभी नक्षत्रों को तीन भागों आदि, मध्य, अन्त्य में विभाजित कर इसका ज्ञान किया जाता है। इस सन्दर्भ में मुहूर्तचिन्तामणिकार का मत है–

ज्येष्ठार्यम्पोशनीराधिपभयुगयुगं दास्त्रभं चैकनाड़ी,
पुष्येन्दुत्वाष्ट मित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्ने च मध्या।
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरा स्याद्,
दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः।। (मु. चि. वि. प्र.)

उक्त प्रकार से आठों मेलापकों (कूटों) का विचार विवाहार्थ करने का निर्देश प्राप्त होता है। यद्यपि इनके परिहार भी अनेकविध प्राप्त होते हैं, तथापि सुखद दाम्पत्य के लिए ये विचार आवश्यक हैं।

वैवाहिक जीवन में मेलापक का प्रभाव

हमारी भारतीय संस्कृति के मुख्य दो ही स्तम्भ हैं– पहला संस्कृत भाषा, दूसरा संस्कार। संस्कार षोडश होते हैं। जिनमें विवाह संस्कार को यदि सर्वश्रेष्ठ कहा जाए तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि इसी संस्कार से व्यक्ति पितऋण से उऋण होने के लिए गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। विवाह संस्कार के महत्त्व के विषय में कश्यप जी कहते है–

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि गृहस्थाश्रममुत्तमम्।
य आधारोऽन्याश्रमाणां भूतानां प्राणिनां तथा।।
ऋणत्रयच्छेदकारि धर्मकामार्थसिद्धिम्।
एतत्सर्वं स्थितं स्त्रीषु शीलवृत्तान्वितासु च।।

अर्थात् गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों का आधार, पालन–पोषण करने वाला तथा पुरुषार्थ चतुष्ट्य में से तीन पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम को सिद्ध करने वाला माना गया है।

मेलापक हमारे महर्षियों द्वारा निर्मित एक वैज्ञानिक विधि है। जिसमें अष्टकूटादि के माध्यम से वर के गुणों स्वभावादि को, वधू के गुणो स्वभावादि से मिलाया जाता है। गुण मिलने पर ही विवाह करना चाहिए। यदि बिना गुण मिलाए ही विवाह किया जाए, तो अष्टकूटों में से कौन सा कूट वैवाहिक जीवन के किस विशेष पक्ष का नाश करता है? मैं उस विषय पर चर्चा कर रहा हूँ।

विवाह का इतना महत्त्व होने पर भी समाज में देखा जाए तो बहुत से लोगों का वैवाहिक जीवन सुखमय न होकर कष्टप्रद सिद्ध हो रहा है। कुछ लोगों के दुःख का कारण पति–पत्नी का परस्पर स्वभाव का न मिलना, जिससे घर में प्रतिदिन युद्ध के मैदान जैसा वातावरण रहने लग जाता है। इसके प्रमुख कारण मेलापक में प्राप्त गुणों की संख्या कम होना तथा वर्ग शत्रुता हैं। गुणों की संख्या कम से कम कितनी होनी चाहिए? इस विषय में कहा गया है कि–

गुणैः षोडशभिर्निन्द्यं मध्यमां विंशतिस्तथा।

श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परस्तूत्तमोत्तमम्।।

मुहूर्त मार्तण्ड में– **"अहीन्दुर्ध्वं गुणैक्यं शुभम्।"**

अर्थात् गुणों की संख्या 18 से अधिक होनी चाहिए।

वर्ग– वर्ग विचार के विषय में मुहूर्तचिन्तामणि में लिखा है कि

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्।

सर्पाऽऽश्वमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ।।6।।37।।

अवर्गादि वर्गों के खगेशादि स्वामी हैं। अर्थात् अवर्ग का स्वामी गरुड तथा तवर्ग का स्वामी सर्प है। जैसा कि सभी जानते ही हैं कि गरुड और सर्प में परस्पर शत्रुता होती है। इसी प्रकार यदि वर और कन्या के वर्गों में शत्रुता रहेगी तो वह सर्वदा झगड़ते रहेंगे। अतः वर–वधू के वर्गों में शत्रुता नहीं होनी चाहिए।

यदि इस प्रकार मेलाप किया जाए तो पति–पत्नी में प्रतिदिन होने वाले झगड़ों को कम किया जा सकता है। संतानहीनता – यदि मेलापक में राशिकूट के अन्तर्गत वर–कन्या की राशि आपस में नव–पञ्चम हो तो संतानहीनता या संतान नाश आदि होता है। इसी विषय में रत्नद्योत तथा मुहूर्तचिन्तामणि में कहा गया है कि–

षडष्टके तु मरणं त्रिकोण त्वनपत्यता।

नेष्टं द्विर्द्वादशे शेषे दम्पत्योः प्रीतिरुत्तमा।।1।।6।। (रत्नद्योत)

मृत्युः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽपत्य हानिर्निवात्मजे।

द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्।।6।।31।। (मुहूर्तचिन्तामणि)

पुरुष की राशि से पाँचवीं कन्या की राशि हो तो अशुभ, नवम कन्या की राशि हो तो शुभ राशिकूट होता है। अतः मेलापक में राशिकूट का भी सम्यक्तया विचार करना चाहिए जिससे अनपत्यता आदि दोषों से बचा जा सके।

मेरी दृष्टि में उपरोक्त सभी समस्याएँ जो मेलापक का प्रयोग न करने से उत्पन्न होती हैं। उनमें तलाक, पति या पत्नी की शीघ्र मृत्यु होना अर्थात् सम्बन्ध विच्छेद होना सबसे बड़ी समस्या है जो निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। इस विषय में ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में अनेक योग परिहार वाक्यों सहित प्राप्त होते हैं।

वैधव्य योग–

पातालेऽपि तनौ रन्ध्रे जामित्रे वापि च व्यये।

स्थितः कुजः पतिं हन्ति न चेच्छुभयुतेक्षितः ।।70।।47।।

इन्दोरव्युक्तगेहेषु स्थितो भौमऽथवा शनिः ।

पतिहन्ता स्त्रियाश्चैव वरस्य यदि स्त्रीमृतिः ।।70 ।।49।।

(बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्)

लग्न से 1,4,7,8, 12 भावों में स्थित मंगल शुभग्रह के योग या दृष्टि से विहीन हो तो कन्या विधवा हो जाती है। चन्द्र से 1,4,7,8, 12 भावों में भौम या शनि हों तो स्त्री के पति का निधन होता है। वर की कुण्डली में ऐसा योग हो तो स्त्री की मृत्यु होती है। इसी प्रकार मुहूर्त संग्रह दर्पण में भी यही कहा गया है–

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।। (मुहूर्त संग्रह दर्पण)

पत्नी निधन योग– कुछ योग ऐसे होते हैं जो पुरुष की कुण्डली में होने पर उसकी पत्नी का नाश कर देते हैं।

लग्नेऽर्के मन्देऽस्ते जायानाशः।।7।।136।।

कन्याऽङ्गे सूर्ये झषे मन्दे जायानाशः।।7।।139।। (जातकतत्त्वम्)

यदि वर की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में हो तथा शनि सप्तमभाव में स्थित हो तो उस व्यक्ति की स्त्री की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है।

यदि लग्न में कन्या राशि हो तथा वहाँ पर सूर्य स्थित हो तथा सप्तम भाव में मीन राशि में शनि हो तो निश्चय ही पत्नी का नाश होता है।

मन्देऽष्टमे षष्ठे भौमेऽस्ते राहौ भार्या न जीवति ।।7।।137।।

वर की जन्मकुण्डली में अष्टम भाव में शनि हो, छठे भाव में मंगल हो तथा सप्तमभाव में राहु हो तो भी शीघ्र ही पत्नी की मृत्यु हो जाती है।

द्यूनेऽर्के प्रकाशे जायानाशः।।7।।143।।

भौमेऽस्ते नेत्रपाणौ जायानाशः ।।7।।144।। (जातकतत्त्वम्)

यदि प्रकाशावस्था में स्थित सूर्य सप्तमभाव में हो अथवा मंगल सप्तम में नेत्रपाणि अवस्था में हो तो स्त्री का नाश होता है।

परिहार– उपरोक्त वैधव्य, पत्नी नाश इत्यादि योगों के परिहार वाक्य भी प्राप्त हैं अर्थात् उपरोक्त योगों के यदि परिहार वाक्य प्राप्त हो जाएँ तो वह सम्बन्ध विच्छेदादि नहीं होता।

स्त्रीणां वैधव्यदो योगः पुंसां जन्मनि वेद् भवेत्।

तदा पत्नीविनाशः स्यादुभयोश्चेच्छुभं स्मृतम्।।70।।50।।

(बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्)

स्त्रियों का वैधव्यकारक योग पुरुष की कुण्डली में हो तो स्त्री का मरण होता है। दोनों की कुण्डली में यह स्थिति रहे तो कल्याण दायक होती है।

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्।। (फलित संग्रह)

यदि वर या वधू की कुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 भावों में भौम हो वह मंगल दोष (सम्बन्ध विच्छेद) कारक होता है। परन्तु दूसरे की कुण्डली में उसी भाव में शनि आदि पापग्रह स्थित हो तो भौमदोष नहीं होता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।

द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते।। (मुहूर्त पारिजात)

मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ भाव में, मकर राशि का सातवें, कर्क राशि का आठवें एवं धनु राशि का मंगल 12वें भाव में हो तो मंगल दोष नहीं होता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. नारद संहिता।

२. गर्ग संहिता।

3. मनुस्मृति।

4. याज्ञवल्क्य स्मृति।

5. दैवज्ञमनोहर।

6. मुहूर्त चिन्तामणि।